आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2755 • उदयपुर, सोमवार 11 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मानव सेवा में बाधक नहीं, सरहदें, तंजानिया में कृत्रिम अंग माप शिविर

कोई न कोई अपाहिज –'कोई न रहे लाचार' की उक्ति को चरितार्थ करते आपको अपने नारायण सेवा संस्थान ने सरहदों के पार तंजानिया (द. अफ्रीका) के दिव्यांगों को मदद पहुंचाने के लिए दो दिवसीय कृत्रिम अंग एवं कैलीपर माप शिविर 11 व 12 जून को 'द इन्डो तंजानिया कलचरल सेन्टर में आयोजित किया। इस शिविर के सौजन्य का पुण्य लाभ किया श्री लोहाना महाजन और लाल बंग परिवार के भरत भाई परमार ने जो संस्थान संरक्षक के रूप में वर्षों से संस्थान से जुड़े हैं। आपके प्रयासों से तंजनिया के दिव्यांगों को नारायण सेवा की प्रशिक्षित प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिस्ट टीम की सेवाएं सम्भव हुई।

आयोजक परिवार ने तंजानिया के दुर्घटनाग्रस्त गरीब दिव्यांगों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए आस–पास के क्षेत्रों में विभिन्न माध्यमों से भरपूर प्रचार –प्रसार करवाया। जिसके परिणाम स्वरूप पहले दिन 11 जून को 111 लोगों की ओपीडी हुई और उन सभी को कृत्रिम हाथ–पैर व कैलीपर के लिए चयनित करते हुए मेजरमेंट लिया गया। दूसरे दिन डॉ. मानस रंजन साहू की टीम ने 101 की ओपीडी करते हुए 35 दिव्यांगों का माप लिया। इस तरह 165 का कृत्रिम अंग व 13 का केलीपर बनाने के लिए माप लिया गया। इन सभी रोगियों के माप के अनुसार उदयपुर स्थित सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट में अत्याधुनिक आर्टीफिशियल लिम्ब निर्मित किए जाएंगे।

आयोजक मण्डल की निर्धारित तिथि को पुनः फोलोअप केम्प लगाकर सभी रोगियों को कृत्रिम अंग पहनाए जायेंगे। केम्प की सफलता पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने कहा कि नारायण कृपा से मदद की आशा में चाहे कितना भी दूर हो, उस तक पहुंचकर सहायता पहुंचाई जाएगी। शिविर में तरूण नागदा, सुशील कुमार और अनिल पालीवाल का विशेष सहयोग रहा।

शहजादपुर (अम्बाला) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून 2022 को माता बाला सुन्दरी प्रांगण, शहजादपुर में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता नारायण सेवा संस्थान शाखा शहजादपुर, अम्बाला रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 25, कृत्रिम अंग वितरण 21, कैलीपर वितरण 2, शेष कृत्रिम अंग 1 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में श्री अजित जी शास्त्री (शाखा अध्यक्ष) , श्री अंकुश जी गोयल (समाजसेवी) भी रहे।

श्री नरेश जी वैष्णव (टेक्निशियन) श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री सत्यनारायण जी (सहायक), श्री राकेश जी शर्मा (आश्रम प्रभारी) ने भी सेवायें दी।

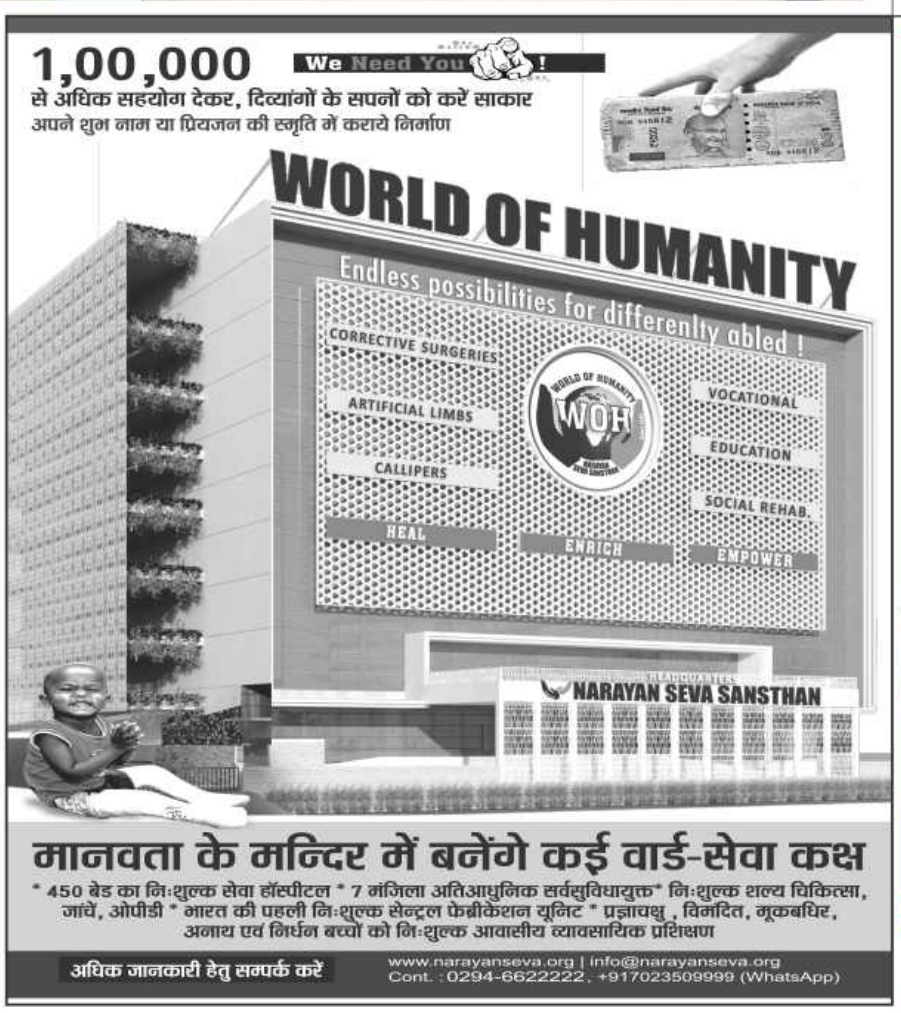

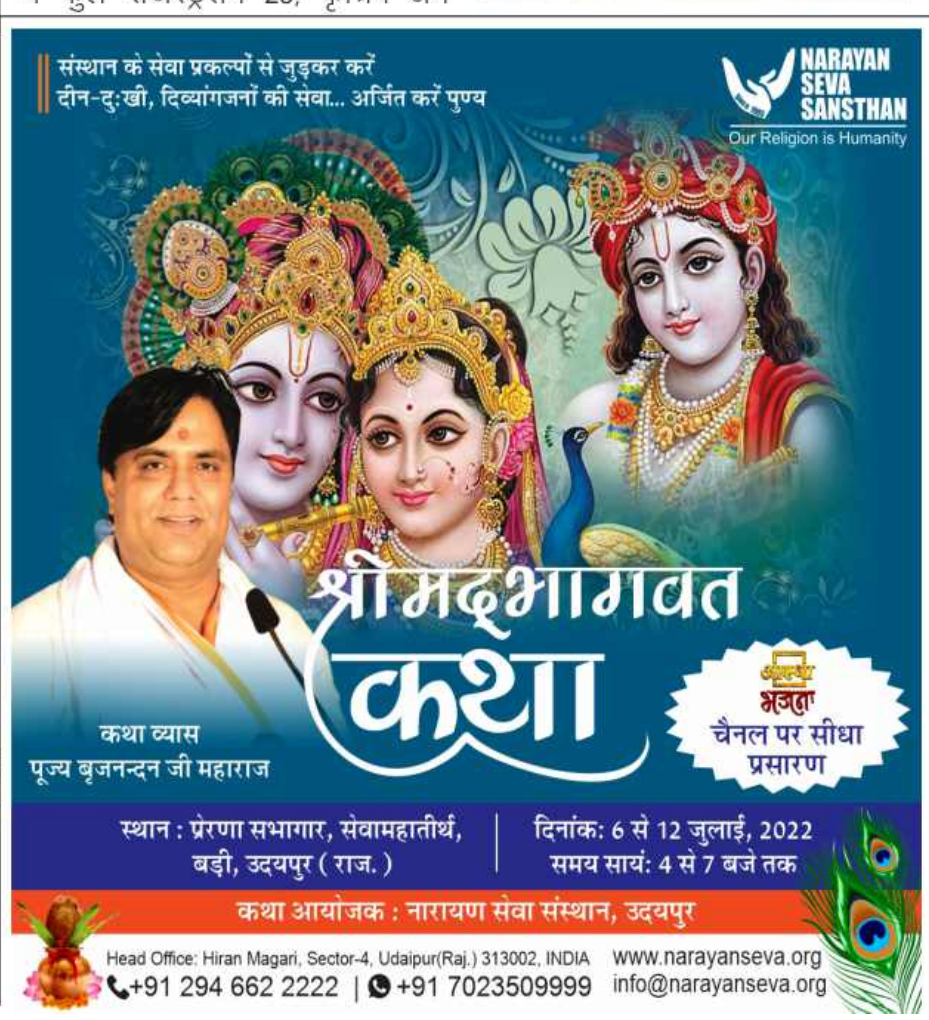

जब हमारी आँखें भर आई

चौपाल से चैनल तक

कौन जानता है कि 'तकदीर'..... कहां से कहां तक पहुंचा देती है... जिसने कभी बचपन में टी.वी. नहीं देखा वह आज एक नहीं 10 चैनलों पर अपने नन्हे श्रीमुख से गीतों के द्वारा घर–घर को सेवा का संदेश देती है....मीना चौहान.... ।

दिव्यांगता जिसके लिए अभिशाप बन गई थी, उससे मुक्त होकर दिव्यांग भाई–बहनों के लिए आत्मविश्वास एवं प्रेरणा को भर देती है.....उसकी निश्छल हंसी में आज भी .....गांव की चौपालें स्पष्ट नजर आती है ......

सन् 1983 में जन्मी मीना.....निर्धन परिवार में गरीब जरूर मगर मन के राजा उसके पिता श्री बहादुर सिंह चौहान एवं अनपढ़ माता गणेश कुंवर को मानो खुशियों का अम्बार मिल गया।

तहसील आसीन्द, भीलवाड़ा जिले के 25–30 घरों की बस्ती वाले गांव धनेरी में जब बच्ची के जन्म की बधाइयां देने सब घर आये तो उन्हें गुड़ से मीठा मुंह कराने तक भी नहीं था। एक जून की रोटी भी नसीब नहीं होने वाले परिवार पर प्रकृति के कहर की मार तब लगी जब सन् 1984 में एक वर्षीय नन्ही जान को पोलियो ने जकड़ लिया.....

कई डेरों पर जाकर मन्नते मांगी लेकिन सब बेकार।

उल्टे घर में जो दो–चार बचे–खुचे गहने थे वो भी कलियुग ने हर लिये।

गरीब पिता ने आस नहीं छोड़ी। पोलियो ग्रस्त बच्ची को देखकर जब बहादुर सिंह की पत्नी (बच्ची की माँ) रोती थी तब वे कहते थे –मुझे विश्वास है यह बच्ची हम पर बोझ नहीं बनेगी। देखना ये दिव्यांग है तो क्या हुआ ? परन्तु भगवान ने उसको समझने की ताकत कुछ ज्यादा ही दे दी है। घर के सामने चौपाल पर जब बच्चे खेलते थे तब वह घिसटते हुए जाती तो दूसरे बच्चे उसका उपहास करते थे। यह देखकर माँ–बाप अन्दर ही अन्दर जहर का घूंट पीकर रह जाते...करें तो करें कृया? पर वह अबोध बालिका अपने छोटे हाथों से आँसू पोंछती, मानो यह कहना चाहती हो कि आप चिन्ता न करें ये चौपालें मेरे लिए नहीं है तो क्या हुआ लेकिन? दूसरों के खेतों में मजदूरी करके अपनी बच्ची को पढ़ाने का संकल्प लेने वाले माता–पिता ने अपने खाने का अनाज बेचकर "एक पुरानी साईकिल खरीदी।"

दिव्यांग मीना को रोज उस पर बिठाकर उसके पिता स्कूल छोड़ने जाते नवकटार गांव....कविता बोलने का शौक था। मंच पर उसे उठा कर ले जाते.....या घिसटकर जाती तो ठीक ....कविता पाठ में हर बार प्रथम आने वाली लड़की की काबिलियत स्थानीय स्कूल के प्रधानाचार्य जी ने पहचानी। उन्होंने बहादुर सिंह जी को राय दी कि लड़की का कंठ अच्छा है आप इसे अन्यत्र ले जायें। यकायक मीना की आँखों से आँसू बहने लगे....

क्योंकि वह जानती थी कि गरीब माँ–बाप कैसे सब कर पायेंगे....बच्ची की आँखों को पौंछा। पिता ने और कहा –बेटा ! मैं तुम्हारी मुराद पूरी करूंगा......

प्रभु का आभार मानती है मीना कि नारायण सेवा संस्थान ने आसीन्द में अपनी शाखा स्थापित की .....शाखा आसीन्द ने भी सेवा कार्य में रूचि दिखाकर उस क्षेत्र से पोलियो दिव्यांगों को उदयपुर संस्थान में निःशुल्क ऑपरेशन हेतु भेजने लगे....उनके साथ मीना भी पहुँची उदयपुर। उसका एक पैसा भी नहीं लगा एवं आनन्द के साथ 1998 में सफल ऑपरेशन हो गया वो थोड़ा चलने लगी। उसके पिता ने भी इस बीच उदयपुर में ऑटो चलाना सीख लिया।

सन् 1999 में मीना भीलवाड़ा में पढ़ने लगी उसके पिता ऑटो चलाते। वह संगीत स्कूल में जाने लगी। सभी उसके कोकिल कण्ठ को संवारते। वो अच्छा गाने लगी। लेकिन उसके मन में टीस थी कि "वह दिव्यांग बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकी।" इसलिए एक दिन पिता बहादुर जी को बोला –पापा मैं दिव्यांग भाई बहनों के लिए कुछ करना चाहती हूँ। मैं वहां पढ़ूगी एवं संस्थान में सेवाएं दूंगी। उसके पिता ने उसके मन को समझा और उसे लेकर उदयपुर आये। दिन भर पिता ऑटो चलाते और मीना दो घण्टे संस्थान में रोगी सेवाएं देने लगी एवं संगीत की ट्रेनिंग भी लेने लगी।

प्रभु ने सुनी उसकी संस्थान में पोलियो सर्जिकल शिविर के शुभारम्भ का कार्यक्रम था। उसमें गाने की इच्छा जाहिर की। 19 वर्षीय उस बालिका ने सबकी आंखों के पौर गीले कर दिये "चल–चल मेरी बैसाखी" गीत सुनाकर। प्रशान्त जी ने उसे चैनलों पर संस्थान के प्रसारित सेवा प्रवचनों के एपिसोडो में गाने को कहा। मानो यकायक उसकी मुरादें पूरी हो गयी। उसकी आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे। उसे एक ही निगाह में आंखों के सामने गांव की चौपाल से चैनल तक के जीवन चक्र की याद ताजा हो उठी। मीना कहती है– मेरा संकल्प है कि मैं ज्यादा से ज्यादा सेवा कर दिव्यांगों में आत्मविश्वास की अलख जगाऊंगी एवं कहती है कि संस्थान ने उसके माथे से दिव्यांगता का अभिशाप मिटा दिया जो मैं भार बनी हुई थी परिवार पर लेकिन आज मैं खूश हूं कि संस्थान के कारण मैं स्वावलम्बी बनी वो भी निःशुल्क।

इतना तो मैं भी जानती हूं कि मैं स्त्री हूं और उसमें भी दिव्यांग रह जाती तो ना–बा–बा–ना सोचती हूं तो दिल कांप जाता है–याद आ जाता फिर चौपाल और चैनल।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

गुरुजी – जिस घर में बुर्जुर्गों का सम्मान होता है, वहाँ स्थायी रुप से लक्ष्मी जी का वासा होता है ऐसा हमने पुराणों में पढ़ा है और पाया हैं। हमने तो यहां तक देखा है, कि एक घर है दादी माँ 90 साल की है। बेटे पौते– पौतियाँ सब काम कर रही दौड़ रही है पर वो जान रही दादी माँ जब तक है इनके आशीर्वाद से हमारे घर में लक्ष्मी जी स्थायी रुप से बिराजमान है। मेहनत करना भी अच्छा, आर्शीवाद देना भी अच्छा। ये जो हृदय में अनाहत चक्र निवास करता है ये पूर शरीर के सम्पूर्ण खून को पम्पिंग करता है। भेद–भाव नहीं करता ये पैर के अंगूठे का खून है इसमे भेद कर लूं। ये घुटने का खून है इसमे भेद करलूं ऐसा नहीं होता। घुटने के बीच तो एक जल भी होता है बाबूजी हाँ जैसे नारियल श्रीफल के बीचों बीच में जल होता है। कहते हैं पानी वाला नारियल लाना भाई! पानी वाला श्रीफल लाना और उसको बजायेंगे तो पानी की आवाज आवे। अपने घुटनों में श्रीजलः नमः तो इस जल में भी खून पहुँचाता है। और घुटने का खून भी पम्प करता है तो वो की वो ही भावना कोई भेद–भाव नहीं जैसे हमारा हृदय भेद नहीं करता, हमारा देह–देवालय भेद नहीं करता, हमारा मस्तिष्क भेद नहीं करता।

सेवा - स्मृति के क्षण

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

नीतिकारों ने कहा है कि कभी किसी को धोखा मत दो। हम किसी को धोखा देकर यह सिद्ध करके प्रसन्न हो जाते हैं कि हमने चालाकी से अपना उल्लू सीधा कर लिया। यह नहीं सोचते कि हमने जिसके साथ धोखा किया है, उस पर क्या गुजरेगी? हमारी आदत हो गई है कि हम केवल अपना ही सोचते हैं, दूसरों के बारे में हम क्यों सोचें? यह आदत ठीक है क्या? वास्तव में हमने धोखा देकर अपना कार्य तो सिद्ध कर लिया किन्तु हमने आगे वाले के विश्वास को तोड़ दिया है। उसका विश्वास टूटना उसके लिये बड़ी दुर्घटना है। इस दुर्घटना से वह न केवल आहत होता है वरन् उसका विश्वास भी डगमगा जाता है। यदि हमने किसी का विश्वास डगमगा दिया तो उसका जीवन तो नष्ट कर ही दिया। इसलिये दो अपराध हो रहे हैं –एक तो धोखा देकर और दूसरा विश्वास तोड़कर। इस दोहरे पाप से बचना चाहिये।

कुछ काव्यमय

धोखा देना है अपराध।
यही पाप है निर्विवाद।
अगले का टूटे विश्वास।
भावों का होता है नाश।
हम जिसको समझें चालाकी।
वो केवल होती बैसाखी।
जिससे भावों का हो खंडन।
उन बातों का कर लो मुंडन।

अपनों से अपनी बात

ऋषि परंपरा

बहुत भूख लग रही है माँ....., फुलका सिक तो गया आप देती क्यों नहीं.....

"अरे, क्या तुझे मालूम नहीं, पहली रोटी तो गाय की होती है। ठहर, अभी सिक रही है दूसरी रोटी।" माँ का प्यार भरा उत्तर था।

धन्य धन्य है भारत की ऋषि परम्परा को – जिसने हर माँ को यह सिखाया कि पहिला फलका गाय के लिए और अन्तिम श्वान के लिए। हमारी कमाई में से अतिथि का भी हक बनता है और मनुष्यों के ऊपर आश्रित रहने वाली गाय माता का भी।

जब भी संस्था के पचासों साथी मिलजुल कर बनवासी क्षेत्रों में सेवा कार्य करते हैं, याद आ जाते हैं किसना जी भील के वे आंसूँ जिन्होंने जन्म दिया "नारायण सेवा" को। अक्टूबर 1985 का वह दिन–जनरल हॉस्पीटल उदयपुर का सर्जिकल वार्ड नं. 11 बेड नं.9 हमेशा की तरह किसना जी (आदिवासी) ने जाकर राम–राम की। अपनी जर्जर काया को साधते हुए उन्होंने राम–राम का जवाब दिया ही था कि हॉस्पीटल की भोजन की ट्रोली आ गई।

मैंने थाली लेकर किसना जी को दी, उस गरीब बेसहारा ने एक रोटी खाई और बाकी तीन रोटियां और सब्जी रख दी अपने जर्मन के कटोरे में। पूछा गया –क्यों बासा कई आपरी भूख बंद बेईरी है? (बा साहब क्या आपकी भूख बंद हो रही है?) एक मिनट वह मौन रहा, फिर रुंधे गले से बोला –"बावजी मने लेइने म्हारा दो भाई आयोड़ा है, दो दिन वेईग्या पैसा बिल्कुल नहीं रिया, आटो कटुं लावा, तीनी जणा मलान ये रोटियां खावां हाँ। (श्रीमान मुझे लेकर मेरे दो भाई भी आये हुए है, दो दिन से पैसे बिल्कुल समाप्त हो गये है, आटा कैसे खरीदें, तीनों भाई मिलकर एक ही थाली का भोजन कर लेते है।) कुछ क्षण वह और मौन रहा, सहानुभूति मिलते ही उसके सब्र का बांध टूट गया और वह 60 वर्षीय किसना जी फूट–फूट कर रोने लगा अपने दुर्भाग्य और बेबसी पर।

गीली हो आई हमारी आँखें–एक विचार आया–अपने परिचित पांच–सात घरों में खाली डिब्बे रखे–उनसे निवेदन किया कि ऋषि परम्परा का पालन करते हुए कृपया अपना आटा गोंदनें के पूर्व एक मुट्ठी आटा उन लोगों के लिए भी निकालें जो दो–दो रात भूखे रह कर गुजार लेते है, पर मांग सकते नहीं, बस अपनी गरीबी पर रह जाते हैं मन मसोस कर।

प्रभु कृपा, दुखियों की दुआ एवं आप सभी के आशीर्वाद से इस प्रकार चला–आत्म संतुष्टी का एक क्रम....."स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा।" बड़ी मिठास मिलती है, इन सब में–एक नहीं कई किसना जी भील–कई स्थानों पर मन ही मन पी रहे हैं अपने कडुए आँसुओं को। आईये, ऋषि परम्परा का निर्वाह करने हम बढ़े आगे –सबको साथ लिए–कदम से कदम मिलाये..... **–कैलाश 'मानव'**

संगत का असर

किसी शहर में एक सेठ रहता था। आप और हम जानते हैं। संगत का कितना असर होता हैं। संगत का असर समझने के लिए ये छोटा सा प्रसंग समझना जरूरी है। सेठ का एक बेटा था। बेटे की दोस्ती कुछ ऐसे लड़कों के साथ थी। जिनकी आदत बहुत खराब थी। सेठ को ये सब अच्छा नहीं लगता था। सेठ ने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की पर सेठ कामयाब नहीं हुए। जब भी सेठ उसको समझाने की कोशिश करते, बेटा कह देता मैं उनकी गलत आदतों को नहीं अपनाता। इस बात से दुःखी होकर सेठ ने अपने बेटे को सबक सिखाना चाहा। एक कोई उदाहरण देना चाहा। उसके ह्रदय में उतर जाये और वो बुरी संगत छोड़ दे।

सेठजी बाहर से कुछ सेब खरीद कर लेकर आये। उन्होनें एक साथ सेब को रखे। सेब में एक सड़ा हुआ सेब भी लेकर आये। ला कर सेठ ने अपने लड़के को सेब दिए। कहा इनको अलमारी में रख दो। इन सबको हम कल खायेंगे। जब बेटा सेब देखने लगा तो एक सेब सड़ा हुआ देखकर सेठ से बोला ये सेब तो सड़ा हुआ हैं। सेठ ने बोला कोई बात नहीं कल खायेंगे, कल देखेंगे। अभी तुम रख दो।

दूसरे दिन सेठ ने अपने बेटे से सेब निकालने को कहा। उसके बेटे ने जब सेब निकाली, तो आधे से ज्यादा सेब सड़े हुए थे। सेठ के लड़के ने कहा इस एक सेब ने तो बाकी सेबों को सड़ा दिया है। तब सेठ ने कहा ये सब संगत का असर है।

बेटा इसी तरह गलत संगत से अच्छा आदमी भी खराब हो जाता है, गलत काम करने लगता है। गलत संगत को छोड़ दो बेटा, बेटे के समझ में बात आ गयी। और उसने वादा किया कि अब वो गलत संगत में नहीं जायेगा। हमेशा अच्छी संगत में ही रहेगा। आप सबको और हम सबको ध्यान देना चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

अमेरिका आये महीना भर होने को था। अब वापसी के दिन आ रहे थे। मनु भाई के साथ रहते ही एक दिन एक व्यक्ति कैलाश से मिला, उसने बताया कि यहां से 200 कि.मी. दूर तक एक नगर है जहां उसके मित्र रहते है, अगर आप वहां चलें तो 1000 – 1500 डालर एकत्र हो सकते हैं। कैलाश ने खुश होकर हामी भर दी । मनु भाई को जब वह बात पता चली तो बहुत नाराज हुए, हमसे पूछा ही नहीं और हां भर दी, तुम यहां के लोगों को नहीं जानते। डॉ. अग्रवाल भी नाराज हो गये। दोनों को इस तरह रूष्ट देखा तो कैलाश ने कहा दिया कि वहां नहीं जायेंगे। उसके लिये पैसे से ज्यादा अपने साथियों को प्रसन्नता महत्पूर्ण थी। कैलाश को इस तरह के मतभेदों का पहले ही आभास था उसने उदयपुर से निकलते समय हो डॉ. अग्रवाल के चरणों में गिरते हुए उनमें हाथ जोड़कर निवेदन कर दिया था कि उदयपुर में से हफ्ते में एकांध बार घंटे दो घंटे के लिये मिलना होता है। इसलिये निभ जाता है। मगर इस यात्रा में महीने भर तक साथ रहना है। मनमुटाव होना स्वाभाविक है। अगर उसकी किसी भी बात से डॉ साहब को वेदना पहुँचे तो उसे क्षमा कर दें। डॉ. अग्रवाल ने तब कैलाश की बात को हंस कर टाल दिया था मगर आज जब वाकई उसे तरह को मनमुटाव प्रत्यक्ष नजर आया तो वे कैलाश की दूरदृष्टि और उसकी मानव व्यवहार पर पकड़ के कायल हो गये। उन्होंने सहज होकर कह दिया कि तेरी इच्छा है तो चले जाना। मनुभाई भी डॉ. अग्रवाल में अचानक आये इस परिवर्तन से हैरान थे। इस तरह हजार 1500 डालर और एकत्र हो गये और वापस भारत लौट आये । अमेरिका का अनुभव कोई खास नहीं रहा । आने– जाने में ही काफी खर्चा हो गया था। रकम भी विशेष नहीं मिली थी मगर महीने भर एक नितान्त नई दुनिया में रहने और तरह – तरह के लोगों से मिलने का अनुभव विलक्षण रहा था।

अंश - 152

शिव आराधना के पावन श्रावण मास में संस्थान से जुड़कर करें दीन दुःखी दिव्यांगजनों की सेवा....और पाये पुण्य

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

कथा आयोजक :
अनिल कुमार मित्तल, अरूण कुमार मित्तल एवं सपरिवार, आगरा

श्रीमद्भागवत कथा

दिनांक:
14 से 20 जुलाई, 2022
समय : सायं
4.00 से 7.00 बजे तक

संस्कार
चैनल पर सीधा प्रसारण

कथा व्यास
डॉ. संजय कृष्ण 'ललित' जी महाराज

स्थान : श्री खाटूश्याम मन्दिर, जीवनी मंडी, आगरा (उ.प्र.)
स्थानीय सम्पर्क सुत्र :9837362741, 9837030304

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

वजन घटाता और त्वचा में निखार लाता आलूबुखारा

आलूबुखारा कई तरह भारीर के लिए फायदेमंद होता है। यह वजन कम करने में असरकारक है। यह वजन कम करने में असरकारक है। इसकी 100 ग्राम मात्रा में 46 कैलोरी होती हैं यह डाइट्री फाइबर से भरपूर होता है, साथ ही इसमें विटामिन्स एवं मिनरल्स भी पाए जाते है। इसे खाने से पाचन तंत्र की कार्य प्रणाली दुरस्त होती है। इसमें मौजूद विटामिन–सी आंखों और त्वचा की हैल्थ बेहतर करने में सहायक है। इसमें विटामिन के और बी6 भी पाया जाता है। यह बैड कॉलेस्ट्रोल को कम करता और इम्युनिटी बढ़ाता है। इसमें मौजूद आयरन, ब्लड सेल्स के निर्माण में सहायक होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अब आसानी से चलने लगी तारा और अनुराधा

सॉफ्टवेयर और ऐप द्वारा संस्थान के आर.एल. डिडवानिया पोलियो हॉस्पीटल में पिछले दिनों नई रणनीति के साथ दो जटिल मामलों की सर्जरी की गई। पोलियो करेक्शन के इन दोनों मामलों में पहली सर्जरी के बाद मरीजों को चलने में मदद मिली। जबकि वे पूर्व में बिना सहारे के उठ भी नहीं सकते थे। सॉफ्टवेयर और ऐप के जरिये सर्जरी करने वाले डॉ. अंकित सिंह चौहान के अनुसार दूसरी सर्जरी में टिबीया हड्डी में शेष रही विकृति को ठीक करने व उसे लम्बा कर रोगी की उंचाई बढ़ाने के लिए इलिजारोव विधि का प्रयोग किया गया। इस सर्जरी के अगल दिन से ही दोनों मामलों में मरीजो की फिजियोथेरेपी शुरू कर दी गई।

इन दोनो मामलों में एक उदयपुर (राजस्थान) की 16 वर्षीय तारा डांगी है। बचपन में घुटनों में चोट के कारण यह चलने में काफी दिक्कत महसूस कर रही थी। सर्जरी से पूर्व उनके एक्स–रे में पाया गया कि घुटने की यह विकृति उनकी दोनों डिस्टल फिमर हड्डियों और प्रॉक्सिमल टिबीया हड्डियों में वैल्गास विकृति के कारण थी। ऐसा ही दूसरा मामला चन्दौली (उत्तरप्रदेश) की 20 वर्षीय अनुराधा तिवारी का है। उन्हें सेरेब्रल पाल्सी के साथ डिस्टल फीमर की तीन आयामी विकृतियों थी।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

भगवान की कृपा से लाला हरिद्वार से जब एक महीना शांतिकुंज से प्रशिक्षण प्राप्त करके आया, अध्यात्म से व्यवहार शुद्ध किया था। यज्ञ भी भगवान ने बहुत करवाये। ईश्वर ने करवाये। मैं तो कुछ जाणूं नहीं तूं जाणे रघुनाथ। उन्हीं यज्ञों में एक यज्ञ विजयादशमी पर 23 अक्टूम्बर 1985 जहाँ से मैं अभी बोल रहा हूँ।

परमानन्द भवन के ठीक सामने चौक में किया गया। ईश्वर को मंजूर था कि जहाँ से नारायण सेवा प्रारम्भ होनी थी। मैं बोला था। मुझे एक मुट्ठी आटा चाहिये। ठीक उसके सामने परमानन्द में रहूंगा। अद्भुत विधान है ईश्वर का। परमानन्द में रह रहे तो परम् आनन्द ही होना चाहिये। ध्यान से होने लगा है, सेवा का अपना लाभ, ध्यान करने से सेवा की रूचियाँ प्राप्त होती है। और सेवा से सुख और शांति मिलती है। अभी जीवन में घटित हो रही है। जाबाली ऋशि उपनिशद् की कथा हवा में कपड़े सूखा करते थे। सिद्धि प्राप्त हो गयी थी। कपड़े को डाला हवा में लटक गये, कुछ भी करने की जरूरत नहीं–सूख जाते हैं। गर्व आ गया, एक कबूतर ने बीट कर दिया–कपड़े पर। तो इतना गुस्सा आया कि कबूतर को भाप दे दिया। कबूतर जलकर भस्म हो गया। उनकी सिद्धि भी समाप्त हो गयी। हवा में लटके हुए कपड़े नीचे आकर गिर गये। आकाशवाणी होती है तुलादार वैश्य की पतिव्रता नारी घर कार्य में लगी थी। मैं सिद्ध जाबाली ऋशि आया हूँ। आइये, बैठिये, गृहिणी नारी ने कहलाया। महाराज जी आइये, बैठिये मैं बच्चों को तैयार कर रही हूँ। इनको विद्यालय भेज रही हूँ। इनके लिये टिफिन बना रही हूँ, आप बिराजिये आपके लिये मैं प्रसाद भेजती हूँ। थोड़ी देर बाद आपके चरणों में प्रणाम करने आऊंगी।

जाबाली ऋषि को पुनः क्रोध आ गया। अरे! मालूम नहीं मैं कितना बड़ा ऋषि आया हूँ? तुझे बच्चों को टिफिन देना छोटा मोटा काम होता रहता है। जल्दी आ जाओ, नहीं तो मैं भाप दे दूंगा। अन्दर से एक पतिव्रता नारी बोलती है। महाराज में कोई कबूतर नहीं हूँ। जो आपके भाप देने से मैं भस्म हो जाऊंगी। बिराजिये, बिराजिये मैं थोड़ी देर बाद आती हूँ। उन्होंने सोचा कि इसको कबूतर का कैसे पता है? कबूतर को तो मैंने भाप जंगल में दिया था, और वहीं जलकर भस्म हो गया, और जंगल तो बहुत दूर है। और ये नारी कह रही मैं कबूतर नही हूँ। फिर उन्होंने ध्यान लगाया उन्होंने तुलादार वैश्य देखा जो कभी कम नहीं तोलता, मैं तो मिलावट नहीं करता, बहुत अच्छा। यही धर्म है। धर्म को धर्म ही रहने देवें। धर्म है विकारों को नहीं रखना, क्रोध जो विकार है कामवासना जो विकार है, तृष्णा, मान सम्मान, पद की प्रतिष्ठा प्राप्त करने की इच्छा ये सब विकार है–लाला बाबू।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 505 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023